काया कामण अत सुआलेयो

गुरु और गुरु की बाणी

(सत्संदेश मई 1968 में प्रकाशित प्रवचन)

सत्संग के पहले पाठी ने शहिनशाह का एक भजन गाया, "गुरु बिना जग में कौन है तेरा।"

गुरु की महिमा, सब वेद-शास्त्रों, ग्रन्थ पोथियों ने गाई। जितने महापुरुष आज दिन तक आए सब के ग्रन्थों से मालूम होगा कि उन्होंने गुरु की बड़ी गहिमा की है, और यहाँ तक की है कि गुरु को परमेश्वर से भी और बढ़ा कर दिखाया है। गुरु ने परमेश्वर से क्या बड़ा होना है, एक तमीज़ी बयान है शुक्राने का। वरना होता कौन है वह? गुरु लफ्ज़ आज कोई नया नहीं। जब जब महापुरुष पाते रहे, वह इस बात का निर्णय करते रहे। जब आमिल (अनुभवी) लोग रहे तो वह सही-नज़री देते रहे। आमिल लोगों की कमी हो गयी, कुछ का कुछ बन गया। यह सवाल गुरु नानक साहब से किया गया था, सिद्धों ने किया था, कि ऐ नानक तू यह बता तेरा गुरु कौन है? तो आप फरमाने लगेः-

शब्द गुरु, सुरत धुन चेला।

कि शब्द गुरु है, मेरी सुरति उसकी चेला है। शब्द किस को कहते हैं? वह परमात्मा अशब्द है, अनाम है, Absolute है- जो अभी इज़हार में नहीं आया, जो परमात्मा Absolute है। जो इज़हार में कहो, experssion में आया है- God into expression Power- उस को लफ्ज़ शब्द या नाम से बयान किया

है। परमात्मा परिपूर्ण का नाम शब्द है। उस को नाम कहते हैं। उसको Word कहते हैं। यही सवाल कबीर साहब से पूछा गया कि तेरा गुरु कहाँ रहता है?

गूरु तुम्हारा कहाँ है चेला कहा रहाय।

तेरा गुरु कहाँ रहता है? चेला कहाँ रहता है? क्यों कर उससे मिलना हुआ, क्यों कर आना-जाना बना? तो बड़ा साफ़ जवाब दियाः-

गुरु हमारा गगन में चेला है घट माहिं।
सुरति-शब्द मेला भया बिछुड़त कबहूँ नाहिं।।

कि हमारा गुरु गगन में है (माथे पर इशारा कर के) यहाँ रहता है। चेला घट में है। हमारी सुरति जब परिपूर्ण परमात्मा से मिल गई, आना-जाना खत्म हो गया। बड़े साफ लफ्ज़ हैं। अब इस बात को समझने के लिये, गुरु गगन में होना तो बयान किया, उस का क्या मतलब है? इन्सान के जिस्म (शरीर) का मुतालेया (अध्ययन) कीजिये, समझ आ जायेगी बात क्या है? गुरु गगन में कहाँ रहता है? यह तो समझ आ गया ना कि गुरु कौन है? वह जिस्म तो न रहा ना। गगन में कैसे रहता है? कहां रहता है? इस को जरा अपने इन्सानी जिस्म का ज़रा गौर डाल कर मुतालेया करो, इस में गुरु कहाँ है? यह कहा ना, गगन में रहता है। इन्सान का, जिस्म क्या कहना चाहिये, a wonderful house we live in (आश्चर्यजनक मकान है)। वह कौन सा महान कारीगर है, जिस ने इस तन की रचना की है? इस में कई सुराख आँखों के, कानों के, नासिका के, मुँह के, गुदा और इन्द्री के, होते हुए भी, रहने वाला इस से भाग नहीं सकता। सांस बाहर जाता है, बाहर रह नहीं सकता। कोई ताकत उस को धकेल कर push कर के अंदर ला रही है। इस जिस्म का आप मुतालेया (अध्ययन) करेंगे कि इस में हमारा गगन में जो गुरु रहता है, कैसे रहता है? जिस्म की शोभा उस वक्त तक है जब तक हम इस जिस्म के साथ हैं।

तिच्चड़ वसे सहेलड़ी जिच्चर साथी नाल।।

जां साथी उठि चल्लेया ताँ धन खाकुराल।।

जिस्म की दुनिया उस वक्त तक आबाद है, जब तक इस का साथी इस के साथ है। कौन? हम। जब यह इस से जुदा होगा, इसे कौन पूछेगा? और हम इस में कैद हैं, कैद। कोई चीज़ हमें इस में बाँध रही है, कन्ट्रोल कर रही है। जब तक वह ताकत है, हम जिस्म के साथ हैं। जब वह सत्या (सत्ता) हटती है, हमें यह जिस्म छोड़ना पड़ता है। वही ताकत खण्डों और ब्रह्मण्डों को लिये खड़ी है। करोड़ों ब्रह्माण्ड हैं, कितना तन्ज़ीम (व्यवस्था) में जा रहे हैं, कंट्रोल में- एक दूसरे से टकराते नहीं, जब वह सत्या (सत्ता) उन से हटती है, तो उन की (खण्डों-ब्रह्माण्डों की) प्रलय-महाप्रलय हो जाती है। तो वह है कंट्रोलिंग पावर। उस कंट्रोलिंग पावर को संतों की इस्तेहाल (परिभाषा) में नाम या शब्द कहते हैं। बात समझ आई? God into action Power, God into expression Power, जो सब खण्डों-ब्रह्माण्डो को लिये खड़ी है उस को कहते हैं नाम या शब्द।

नानक नामे के सब कुछ वस है, पूरे भाग को पाय।।

वह नाम कंट्रोलिंग पावर है, पूरे भागों से उस का contact (परिचय) मिलता है।

धुर कर्म पाया तुध जिन को, से नाम हर के लागे।।

जिस पर वह प्रभु आप कृपा करे, मालिक, वह नाम के साथ लगता है। तो नाम पावर क्या हुई। जो खण्डों-ब्रह्माण्डों को लिये खड़ी है।

उत्पत परलय शब्दे होवै, शब्दे ही फिर ओपत होवै।।

जिस ताकत के आधार पर उत्पत्ति और प्रलय होती है, दोबारा सृष्टि का

आगाज़ (आरंभ) होता है, उस ताकत का नाम है शब्द। बात समझ आ गई? वह कंट्रोलिंग पावर है। कहां उस का contact (सम्बन्ध) है? हमारे अन्तर। जहाँ मर कर रूह जाती है। इस जिस्म में रूह का ठिकाना कहां है? आप ने मरते आदमी देखे हैं, नीचे चक्र टूटते हैं, कण्ठ बजता है, आँखें फिर जाती है। जैसे बल्ब है। सारे कमरे में उस की रोशनी है। है एक जगह। इसी तरह रूह का बल्ब आंखों के पीछे है, जहां मर कर रूह जाती है। वहां से हमारी आत्मा को जिस्म में कंट्रोल कर रही है। बात समझ में आ गई? वह गुरू हमारा। "गुरु हमारा गगन में, चेला है घट माहिं। सुरति शब्द मेला भया बिछुड़त कबहु नाहिं।" हमारी सुरति जो चेला थी, जिस्म में फैली हुई थी बाहर, वह उस के साथ लग गई, आना-जाना खत्म हो गया। तो अब आप समझे गुरु कौन है? दशम गुरु साहब ने और वाज़ेह (स्पष्ट) किया है इस बात को।

आदि अन्त एक अवतारा, सोई गुरु समझो हमारा।।

जो आदि और अन्त में, वह मालिक है, परमात्मा, वही गुरु है हमारा। बात समझे? अब वह परमात्मा हरेक घट में, हमारी आत्मा को जिस्म के साथ कायम रख रहा है। घट-घट में हैं। वह हमारा जीवन आधार है।

सब्बो घट मेरे साईयां सुंजी सेज न कोय।।
बलिहारी तिस घट के जा घट परगट होय।।

है सब की कंट्रोलिंग पावर, हमारा जीवन आधार है। मगर जिस घट में वह प्रगट है, वह बलिहार जाने के काबिल है। तो गुरु कौन हुआ? वह परमात्मा। जिस इन्सानी Pole (मानव देह) में वह manifest (प्रगट) हो गया, उस की हम कद्र करते हैं। अब परमात्मा के साथ कौन मिला सकता है? परमात्मा का कोई भाई नहीं, बन्धु नहीं, माता नहीं, पिता नहीं- तो अवश्य कहना पड़ेगा,

उस के साथ कोई मिला सकता है, तो आप वही मिला सकता है। कौन? the manifested God in man (मानव देह में प्रगट प्रभु) not the son of man (मानव का जाया, मानव नहीं)। किसी महापुरुष ने आज दिन तक यह नहीं कहा कि मैं गुरु हूँ, पूर्ण पुरुष हूँ। सब ने यही कहा कि मैं नहीं करता, वह करता है।

मेरा किया कुछ न होय, जो हरि भावे सो होय।

और

कबीर कूकर राम को, मुतिया मोको नाओं।
गले हमारे जेवड़ी, जहं खींचे तहं जाओं।

अब आप समझे? जो Conscious Coworker (प्रभु में अभेद) हो जाते हैं, उस Divine Plan के, उस को हम साधु, सन्त और महात्मा कहते हैं। उस को Word कहते हैं। Word गुरु है, मगरः-

Word was made flesh and dwelt amongst us. (Bible)

वह शब्द किसी इन्सानी Pole (मानव शरीर) पर सदेह हो गया, manifest (प्रगट) हो गया और हमारे दरम्यान रहता है, to guide the child humanity (अपने बच्चों, इन्सानों के पथ प्रदर्शन के लिये)। बात समझे? यही गुरुबाणी में आता हैः-

गुरु में आप समोये शब्द वरताया॥

वह इन्सानी Pole पर जब manifest (प्रगट) होता है, समाता है, तो वह परिपूर्ण परमात्मा से जोड़ता है। तो मैं अर्ज़ कर रहा था गुरु कौन?

तन मियाने खल्को जां निज़दे खुदावन्दे जहां।

उस का तन दुनिया के दरम्यान नज़र आता है, मगर उस की आत्मा प्रभु से जुड़ी पड़ी है। He is the mouthpece of God (वह मुख है प्रभु का)।

जैसे में आवे ख़सम की वाणी, तैसड़ा करि ज्ञान वे लालो।।

बात समझे?

तन गिरफ़तारे जमीं व रूह बर हफ्त आसमां।

उस का तन दुनिया में काम काज करता नज़र आता है, नौकरी, चाकरी, दुकानदारी, बाल-बच्चों को पालता भी नज़र आता है, मगर जब चाहता है, वह जिस्म-जिस्मानियत से rise above करता (ऊपर आता) है, आसमानों का सफ़र करता है। वह इन्सानी शक्ल रखता है, लेकिन इन्सानी शक्ल में manifested God in man या man in God कहो, हमारी तरह ही पैदा होता है, हमारी तरह ही उसका बाहरी, अन्तरी, सिलसिला है। मगर फर्क क्या है? हम सब की आत्मा मन के साथ लग कर जीव बन गई, मन आगे इन्द्रजाल में फंसा हुआ इंद्रियों के भोगों-रसों में लम्पट हो रहा है, इतना यह इस का रूप बन चुका है कि अपने आप को भूल चुका है अपने जीवन आधार को भूल चुका है। उस की आत्मा मन-इन्द्रियों को ताकत देती है। याद रखो, सुरति ही से मन ताकत लेता है, सुरति ही से बुद्धि ताकत लेती है, सुरति ही से इन्द्रियां ताकत लेती हैं। सुरति ही से सारा जहान महसूस होता है। अगर सुरति को हटा लो, कुछ भी नहीं। आप ने तजरबा किया होगा, कई बार आप ख्याल में महव बैठ हो, कोई आदमी आप को आवाज़ देता है, आप कहते हो मैंने सुना नहीं। क्यों भई? मेरा ध्यान (सुरति) कहीं और लगा हुआ था। जब तक हमारी सुरति या ध्यान इन्द्रियों के साथ नहीं, यह काम नहीं करतीं। एक factory (फैक्टरी) हो। फैक्टरी के कई पटे लगे होते हैं, हरेक डिपार्टमेंट के। जिस डिपार्टमेंट का पटा off कर दो (बन्द कर दो), वह डिपार्टमेंट बन्द। Main पटा off करदो, सारी मशीनरी बन्द। ऐसे ही यह जिस्म रूपी मशीनरी

सुरति से ताकत लेती है। जिस इन्द्री के साथ सुरति को लगाओ, काम करेगी, नहीं तो नहीं करेगी। अगर सारा सुरतिवन्त बन जाये, सारा जिस्म बेहिस (बेजान) हो जाये। यह अजीबो-गरीब मकान है, जिस में हम रह रहे हैं। तो इस में जिस की आत्मा मन-इन्द्रियों से आज़ाद होकर वह सुरतिवन्त बन गया, वह अपनी मर्ज़ी से देखना है तो देखता है, नहीं तो नहीं देखता। अपनी मर्ज़ी से- कान खुले हैं- सुने सुने न सुने। बैठे हुए, वहां का न हो। जिस को इतना कंट्रोल है अपनी सुरति पर, उस का नाम है, साधु, सन्त और महात्मा। भाई गुरदास ने तारीफ़ की है:-

नौ दर साधे, साध कहाया।

जो नौ द्वारों को साध ले, उस का नाम साधु है। इस जिस्म में नौ दरवाजे हैं, दो आंखों के, दो कानों के, दो नासिका के, मुँह, गुदा और इन्द्री। हमारी हालत क्या है?

नौ घर देख जो कामण भूली वस्त अनूप न पाई।

जो रूह रूपी स्त्री नौ घरों में बाहर भटक रही है, इस के अंतर वह परमात्मा आप बैठा है, उस को पा नहीं सकती। बात समझ आई? तो अनुभवी पुरुष, साधु कहो, सन्त कहो, वह नौ दरों (द्वारों) को साध लेता है, at will (अपनी मर्ज़ी से) उन से काम लेता है। ऐसा सुरतिवन्त पुरुष- आगे जीवन आधार सब का वही प्रभु है- उस का mouthpiece (मुख) बन जाता है। इस लिये क्या कहते हैं:-

गुफ़ते ऊ गुफ़ताये अल्लाह बवद।
गरचे अज़ हंलकू में अब्दुल्लाह बवद।

यानी कहा हुआ उस प्रभु का कहा हुआ होता है, ख्वाह ज़ाहिरी शक्ल में आवाज़ इन्सानी गले से निकलती हुई मालूम होती है। बात समझ आ गई? "जैसे मैं आवे खसम की बाणी तैसड़ा करि ज्ञान वे लालो।" और "नानक दास बुलाया

बोले।" उन को सही-नज़री (विवेक) है, right understanding को पा चुके हैं वह। और वैसे ही प्रभु ने construction हरेक को दी है।

जेही सुरति तेहा तिन राहो।

उन की (दुनियादारों की) सुरति, मन के साथ लगाकर, इन्द्रजाल में फंसकर भोगों-रसों में लम्पट हो रही है। अगर यह बाहर से हटे, इन्द्रजाल को छोड़े, मन से analyse (अलेहदा) हो, अपने आप को जाने, उस प्रभु को जानने वाला हो सकता है। तो इस लिये सारे महापुरुषों ने यह कहा है, अपने आप को जानो, Know thyself.

कहो नानक बिन आपा चीन्हे, मिटे न भ्रम की काई।।

बड़ी साफ़ बात। तो सुरतिवन्त ने अपने आप को जान लिया, अपने जीवन आधार का mouthpiece बन चुका है। उस की सोहबत में और भी उसी गति को पा सकते हैं। किस को? परमात्मा को। जो आगे ही उस का जीवन आधार है। बाहर से कुछ डालना नहीं। बात समझ आई?

जिन्हां दिसंदड़ेयां साडी दुरमत वंजे, मित्र असाडरे सेई।।

जिन के मिलने से हमारी दुर्मति का नाश हो, सच्चे मानों में वह हमारे मित्र हैं। तो वह क्या करते हैं? वह हमें सही-नज़री देते हैं। वह क्या कहते हैं। वह कहते हैं, यह wonderful house (आश्चर्यजनक मकान) है, जिस में हम रह रहे हैं। यह बड़े भागों से मिलता है। सब वेद-शास्त्रों ने इस की महिमा गाई है। इसे ब्रह्मपुरी कर के बयान किया है, यह ब्रह्म के साक्षात्कार करने की जगह है। इस की नौ दरवाजों वाली, 6 चक्रों वाली (अयोध्यापुरी) कर के बयान किया है। इस में सब देवताओं का वास है। देवी-देवता भी इस मनुष्य देही को पाने के लिये तरस रहे हैं। He is next to God (परमात्मा के बाद उसी का दर्जा है)।

बाद अफ़ खुदा बुजुर्ग तुई किस्सा मुख्तसर।

हम बड़े भाग्यशाली है कि हम को मनुष्य जीवन मिला। तो ऐसे पुरुष की सोहबत में हम क्या करते हैं, ऐसे पुरुष हमें क्या हिदायत देते हैं, उस का अब महापुरुषों के द्वारा निर्णय आप के सामने रखा जाएगा। गुरु अमर दास जी साहब 70-72 साल की तलाश के बाद बड़े-बड़े साधन किये होंगे, जिन का detail (खोलकर) में ज़िक्र नहीं है, मगर उन की बासियों से मालूम होता है। 70-72 साल तक जो तलाश में रहे, तीर्थों पर जाते रहे, क्या कुछ उन्होंने नहीं किया होगा। जब उन्होंने इस असलियत को पाया है, वही सही मानों में बयान कर सकते हैं, यह क्या है। वह क्या कहते हैं, अपनी ज़िन्दगी के तजरबे के बाद, जब वह गुरु अंगद साहब के चरणों में आए हैं, वह आप के सामने शब्द आ रहा है। गौर से सुनिये वह क्या कहते हैं:-

काया कामण अति सुवालेयो, पिर वस्से जिस नाले।।

कहते हैं वह काया अति सुन्दर है जिस में उस का पति विराजमान है, manifest है। इन्सान का जामा, यह बयान किया है सब महापुरुषों ने, कि जब सारे तन बन चुके तो फ़रिशतों को, मुसलमान फकीर कहते हैं, हुक्म दिया कि इस को सिजदा (प्रणाम) करो। त्रैतेय उपनिषद में आता है कि सब ऋषि, मुनि, महात्मा जब आये, तो उन्होंने इन्सान के तन को कबूल किया। बड़ी भारी फ़जीलत (महत्व) है। वह देह हम को मिल चुकी है। हम बड़े भाग्यशाली हैं। तो गुरु अमरदास जी फरमाते हैं, यह काया अति सुन्दर है। किस की? जिस के अन्तर उस का पति, परमात्मा प्रगट है। है तो सब में। यह शरीर हमारा, हरि मंदिर है, जिस में वह प्रगट है, कहते हैं, उस की काया अति सुन्दर है। यह मंदिर कब मालूम होता है? कहते हैं-

गुर परसादी वेख तू हर मन्दर तेरे नाल।।

किसी अनुभवी पुरुष की कृपा द्वारा, यह देखोगे यही हरि मंदिर है, मानव देह जो हम लिये फिर रहे हैं, जिसे हम ग़लाज़त समझते हैं, जिस तन में है हमारा जीवन आधार, सब का। यह काया अति सुन्दर है। हम, माफ करना, इस जिस्म को बड़ा साफ सुथरा रख के बड़े टायलेट बरतते हैं। लाखों रूपये का टायलेट खर्च हो जाता है, हरेक मुल्क में। फिर भी सुबह के वक्त जा के देखो उन की शक्लें। वही यह जिस्म जिस में प्रभु बसता है, इस से खुशबू आनी चाहिये। बाहर खुशबू लगाता है, एक दिन न बरतो, फिर बदबू आती है। क्यों? हरेक ख्याल का रंग और बू होती है। जिस के ख्यालात पवित्र हैं, उस को किसी खुशबू की ज़रूरत नहीं है। जैसा ख्याल, वैसा उस का रंग है और बू है। अगर हम psychic eye (सूक्ष्म चक्षु) रखते हैं, हमारे हजूर फरमाया करते थे कि जब कोई आदमी आता है तो वह (महापुरुष) देख लेते हैं कि शीशे की बोतल में मुरब्बा है या आचार। मगर वह परदापोश होते हैं।

कच पकाई ओथे पाए।

जब गलाज़त (मैल) उतर जाये तो पता लगता है, असल में क्या चीज़ है? तो इस के अंतर सच्ची खूबसूरती किस बात में है? कि हमारी आत्मा सन्तुष्ट हो, सुरतिवन्त हो, भटकती न हो। जिस की आत्मा को सुख नहीं- आत्मा को सुख कहाँ हो सकता है? परमात्मा से जुड़कर। स्त्री को सुख कब है? जो पति के साथ बैठे। आत्मा को सुख कब है? जो परमात्मा जीवन आधार के साथ जुड़े। जिस की आत्मा में शान्ति है, उस के मिलने से शान्ति होगी, तृप्ति होगा, टिकाव होगा। उस में जो blood circulation (खून का दौरा है, वह भी rythmic (सुव्यवस्थित) होगी, उसकी radiation (जो धारा उस के शरीर से निकलती है) में भी ख्यालात का असर होगा। बात समझे?

On the spiritual health depends the life of body and mind both.

कि आत्मिक, आध्यात्मिक ज़िन्दगी पर हमारे जिस्म और मन की जिन्दगी, सेहत, निर्भर है। हमने जिस्म को खुराक दी है, जिस्मानी पहलवान बने। बुद्धि को खुराक दी है, बुद्धि के पहलवान हम बने। अरे आत्मा को खुराक क्या दी है? आत्मा की खुराक- पढ़ना लिखना विचारना यह बुद्धि की खुराक - मन - इंद्रियों से आज़ाद हो के अपने जीवन आधार से जुड़ना है। He is the Bread of Life, Water of Life. बात समझे? गुरु अमर दास जी साहब फरमाते हैं, कि इस काया की खूबसूरती किस बात में है- देखिये जैसा ख्याल होगा ना, वैसे ही आँखों में इज़हार होगा, वैसी ही radiation होगी। हमारे अंतर में, फर्ज़ करो (मान लो) प्रेम है, प्यार है, आत्मा में। उस की आँखें कुछ और ही होंगी। उस की radiation, प्रभाव, कुछ और होगा। एक के अंतर lust (काम) है। उस की आँखों में कुछ और रंग होगा, radiation कुछ और होगी। एक में गुस्सा, ईर्षा, द्वेष है। उस की आँखों का रंग कुछ और होगा। जिस में आत्मा रंगी पड़ी है, जिस ख्याल में, वही radiation होगी।

तो हरेक ख्याल की बू भी होती है, और रंग भी होता है। मिसाल के तौर पर, अगर आप इस का कुछ experience (तजरबा) करना चाहो थोड़ा बहुत, तो धूप में खड़े हो जाओ, कमर सूरज की तरफ हो, आगे साये की तरफ देखो, कन्धों की तरफ खास कर बड़े गौरसे देखो। उस में कुछ धुँआँ निकलता मालूम होगा। उस का रंग जैसे होगा, ख्यालात के मुताबिक होगा। अगर कामी ख्याल हैं, क्रोधी हैं तो काला और लाल मिला हुआ रंग होगा। उस की बदबू होगी, जैसे भेड़ों के रेबड़ की होती है। मैंने अभी कहा था कि अगर एक दो दिन तुम टायलेट न बरतो तो बदबू आने लगती है। वह ख्यालों का असर है। जिस के ख्याल में, आत्मा में, सन्तुष्ट है, प्रभु से जुड़ा है, शान्ति है, सब का भला मांगता है, उस के जिस्म से - वह टायलेट नहीं बरतता-तो भी ऐसी खूशबू उस के जिस्म से आती है जैसी चमेली की होती है। बात समझे? प्रेम हो, प्यार-

Love beautifies everything.

मैंने एक किताब पढ़ी थी, बड़ी मुद्दत हुई, इंगलैण्ड की, कि वहाँ एक लड़की थी, बड़ी बदसूरत। सबने reject (रिजैक्ट) कर दिया, शादी उस के साथ कोई नहीं करना चाहता था। लाचार आदमी निराश होता है तो क्या करता है? बाहर गाँव में चली गई। वहां गिरजे में बैठ गई और प्रभु की याद करे। साल, दो साल, गुज़र गये तो एक आदमी आकर कहता है, I want to marry you. (मैं तुम से शादी करना चाहता हूँ)। तुम क्या कहते हो भाई? कहने लगा, मैं ठीक कहता हूँ। कहने लगी, मेरी शक्ल कैसी है? तुम्हारी आँखों में ख़ास झलक है। देखो, महात्माओं की आंख और माथा अपनी किस्म का होता है। उन की आँखों की radiation कुछ और होती है। जिस्म में जो personal aura (वह रोशनी जो प्रत्येक व्यक्ति के शरीर के चारों ओर निकलती है) उस का और ही असर होता है। तो गुरु अमर दास साहब फरमा रहे हैं, "काया कामण अति सुआलेयो पिर वसे जिस नाले।" है तो सब में, मगर वह क्या कहना चाहिये, बिजली earth हो रही है। अगर वह radiation बाकायदा हो जाए तो उस से, थियासोफिस्ट लोग कहते हैं कि हरेक इन्सान का जो personal aura होता है, वह अपना अपना होता है, किसी का 6 इंच, किसी का एक फुट, किसी का ज़्यादा। महापुरुषों का बहुत लम्बा aure होता है। तो radiation में जो आ जाये, नेचरल (स्वाभाविक) है कि उस का असर होगा।

गुरु अमर दास जी का यह राज़े-ज़िन्दगी (ज़िन्दगी की पहेली) हल हुआ गुरु अंगद साहब के चरणों में। वह कहते हैं, वह काया अति सुन्दर है, भाइयो, लाखो रुपये टायलेट पर खर्च करने की बजाय ज़रा life change कर लो। (जीवन को बदलो) हालात बदल जायेंगे। जिस के अन्तर उस का प्रभु बसता है, उस की आत्मा प्रभु में जज़्ब (लीन) हो रही है, उस का mouthpiece (गुरु)

बन रही है, इन्द्रियों को वह ताकत देता है, उन से अच्छी तरह काम लेता है, तो ऐसा पुरुष, जिस में उस का पति (परमात्मा) बैठा है, वह manifested God in man (मानव देह में प्रगट परमात्मा) ही आप को प्रभु के साथ जोड़ सकता है। किस प्रभु से? जो आगे ही तुम्हारा जीवन आधार है। बात समझ आ गई अब? जो लोग कहते हैं, कोई तो कहते हैं देहधारी गुरु की ज़रूरत है, कोई कहते हैं नहीं, देहधारी की ज़रूरत नहीं। बात आप समझे? गुरु तो एक ही है। Manifested God in man और man in God की ज़रूरत है। जिस के अंतर परमात्मा प्रगट है, वही तुम्हारी फैली हुई सुरति को एकत्र करेगा उस की आत्मा में बड़ी भारी ताकत है, यकसू (एकाग्र) कर के इन्द्रीयों के घाट से ऊपर लायेगा, अन्तर की आंख खोलेगा, जिस से अनुभव जाग उठे। वह ताकत हरेक में है, - Every saint has his past and every sinner a future. हरेक महात्मा जो बना है कभी हमारी तरह था। जो हमारी तरह हैं, अगर उतनी ही मदद, guidance, हमको मिल जाए, तो हम भी बन सकते हैं। ऐसे पुरुषों की संगत का नाम सत्संग है। तो कहते हैं, अपनी काया को जो सुन्दर बनाना चाहते हैं- ख्यालात यकसू (एकाग्र) हो, वैसे ही चिन्ह चक्र बन जायेंगे ना- हमारे चिन्ह-चक्र बदलते रहते हैं, ख्यालात के मुताबिक। जितना इसका radiation होगा, जीवन बदलेगा। उन की सोहबत लफ्ज़ों में ही होगी। याद रखो, जो लफ्ज़, जो हवा कहो, बर्फ के साथ लग कर आएगी, वह ठंडी होगी। जिस हृदय में प्रभु का प्यार overflow कर रहा है (उभर रहा है) सब के लिये भला सोच रहा, उस के अन्तर शान्ति है, टिकाव है, रस है- बेअख्त्यार जो लफ्ज़ उस से निकलेगे उस (रंग) से charge होकर (उस रंग में रंगे) निकलेगे। वह उस को (सुनने वाले को) वैसी ही ठण्डक पहुँचायेंगे। जिस का अंतर जीवन नहीं ठीक, ऐसा जीवन बना नही, कितने ही मीठे लफ्ज़ भी वह बरते, असर गर्म होगा। तो कहते हैं, कौन सी काया अति सुन्दर है? "पिर वसे जिस नाले", जिस के अंतर वह प्रभु प्रगट है। एक खूबसूरती का टायलेट मिल गया ना, बगैर

पैसे-धेले के। ख्यालात को बदलो, देखो जीवन पल्टा खाता है कि नहीं। पहले तुम को शान्ति, फिर वह लोग, जो तुम्हारे touch (सम्पर्क) में आयें।

पिर सच्चे ते सदा सुहागता गुरु का शब्द समाले॥

कहते हैं सच्चा पति कौन है आत्मा का? वह परमात्मा। जिस्म का पति, दुनिया का पति। आत्मा का मालिक? परमात्मा।

एका पुरख सवाई नार ॥

तो आत्मा का पति से सम्बन्ध होना, सच्चे पिर प्रीतम से मिलने से ही सदा का सुहाग होगा। दुनिया का सुहाग, दस साल, सौ साल। जो मिला है, वह बिछुड़ेगा, लेने-देने के समान हैं। इस लिये पहला सुहाग यह है कि जिस से सम्बन्ध आया, उस का धर्म पहले निभाये, जिस्मका। दोनों की आत्मा ने प्रभु से जुड़ना है। जो प्रभु से जुड़ गई उस को हमेशा की शान्ति है। प्रभु से जुड़ना कैसे मिलेगा ? कहते है गुरु शब्द द्वारा, और कोई सूरत नहीं। नहीं तो इस काया की क्या कीमत है? "जां साथी उठि चल्लेया तों धन खाकुराल।" जिस्म की शोभा, इज्ज़त, मान उस वक्त तक है, जब तक हम इस के साथ हैं। जिस काया में वह (परमात्मा) प्रगट हो गया, वह जिस स्थान पर बैठा वह तीर्थ स्थान है। नहीं तोः-

एह काया मैं रूलदी देखी ज्यों धन बिन कंता॥

ऐ काया, तेरी कीमत है? हम ने देखा है तू ख़ाक में रूल रही है। इस लिये महापुरुष दूसरों को उपदेश देने की बजाय अपने को देते हैंः-

ऐ सरीरा मेरेया तुध जग में आएके क्या कर्म कमाया॥
क्या कर्म कमाया तुध सरीर, जां तू जग में आया॥

भई क्या किया है? यह मनुष्य जीवन मिला था इस लिये कि इसके अंतर

प्रभु ने जो अनूप वस्तु रखी है उस को हम पा जाते, हमारा आना-जाना खत्म हो जाता, सदा का सुहाग मिल जाता।

मीराबाई सदा सुहागन वर पाया अबिनाशी।

वह सदा का सुहाग कैसे मिले?"

चारे कुंटा जे भवे बिन सत्गुर सुहाग न होई।

बड़ी साफ बात। जब तक कोई सत्स्वरूप हस्ती नहीं मिलती, चारों कुंटो में तलाश कर लो, सदा का सुहाग नहीं मिलता। God in man क्या करता है? वह सदा की सुहागिन स्त्री है, प्रभु की। जो मिलता है उस को सदा का सुहाग देता है। कहते हैं, ऐ इन्सान। तुझे मनुष्य जीवन मिला है, बड़े भागों से। तू ने बड़े काम किये, जो काम करना था वह न किया। बहुत सा हिस्सा उम्र का गुज़र चुका है। थोड़ा बाकी है, इसी से काम ले लो, नहीं तोः-

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे ऐहला जन्म गवाया।।

इस को (शरीर को) संभाल कर रखो जितना रख सकते हो, क्योंकि इसी से हमें काम लेना है। महापुरुष यह नहीं कहते इस से काम न लो। लो। इस को संभालोः-

घट वसे चरणारबिन्द रसना जपे गोपाल।।
नानक तिसही कारणे इस देही को पाल।।

तुम्हारे घट में उस प्रभु के चरणों का निवास हो, तुम उसके देखने वाले बनो, देख कर उस के गुणानुवाद गाने वाले बनो- इस लिये इस देही को पालो। सारे महापुरुष कहते हैं इस को रखो, जितनी देर तुम रख सकते हो। मगर किस लिये? इस को कपड़ा भी पहनाओ ताकि सर्दी-गर्मी से बचाव हो, ज्यादा देर चल सके।

इस को खाने-पीने को दो, यह जिस्म ताकि कायम रहे। किस लिये? प्रभु को पाने के लिये। अगर यह काम नहीं किया तोः-

धृग धृग खाया धृग धृग सोया, धृग धृग कापड़ अंग चढ़ाया।।
धृग सरीर कुटुम्ब सहित स्यों, जित हुण खसम न पाया।।

कितनी importance (महानता) है इस बात की। तो कहते हैं पिर सच्चे के साथ लगने से सदा का सुहाग मिल जाएगा। दुनिया का सुहाग, आप को मुबारिक रहे। ठीक। पहला कदम है। नित का सुहाग वह है, जो आत्मा का प्रभु से जुड़ने का है, स्त्री का भी और पति का भी। वह परमात्मा जिस को पाना है, वह घट-घट में आगे मौजूद है बाहर से डालना नहीं। सिर्फ ऐसे पुरुष की, जिस में वह manifest (प्रगट) हो गया, ऐसे महापुरुष की संगत का नाम सत्संग है। साधु की महिमा एक पूरी अष्टपदी में हैः-

साध के संग मल सगली खोत।।
साध के संग भये आज्ञाकारी।।
साध के संग भई गत हमारी।।

साधु की महिमा है यहः-

साध के संग वस्तु अगोचर मिले।।

पूरी अष्टपदी गाई है। साधु के संग में बैठ कर हम को भी देखने की पूंजी मिलती है, "संतन मो को पूंजी सौपी" शुरु करने के लिये, to start with हमारी आत्मा मन-इन्द्रियों के घाट पर लम्पट होने का कारण इस देह का रूप बन रही है, साधन वह करती है जिस का ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है। अरे वह इन्द्रियों के घाट से ऊपर की चीज़ को कैसे पा सकता है? कोई पा सकता

है। तो कर लो। उस का अनुभव केवल आत्मा ने करना है। नहीं करेगी, जब तक यह मन इन्द्रियों से आजाद नहीं होगी, इस को अपने आप की होश नहीं होगी। आएगी तो इसका जीवन आधार (परमात्मा) आगे ही मौजूद है। Light knows the Light, तो कहते हैं, वह काया अति सुन्दर है जिस की आत्मा उस प्रभु से जुड़ी पड़ी है, उस को सदा का सुहाग मिल जाता है।

अब यह तो हो गई बाहरी, physical world (स्थूल जगत)। इन्सान का जामा एक wonderful house (आश्चर्यजनक मकान) है, फिर मैं अर्ज़ करूँ। इस में Great possibilities (महान संभावनायें) हैं, बड़ी भारी मुमकिनात हैं जिस के मुतल्लिक हमें अभी तक कुछ पता नहीं, और वह क्या है? आगे खोल कर समझायेंगे। ग़ौर से सुनियेः-

हर की भक्ति सदा रंग राता, विच्चों हौमें जाले।।

प्रेम का खासा (गुण) है, "दो ते एक रूप होय गयो।" मैं-पना नहीं रहता। जिस की आत्मा प्रभु के साथ जुड़ी हो, उस नशे में सरशार है, वहाँ मैं-पना कहाँ! प्रेम ही परमात्मा है। प्रेमी जो है, वह एकान्ती है, सच्चा बैरागी है, हज़ारों में वह अकेला है। काँटों में रहता हुआ वह फूलों में वास करता है। क्यों? सुरति उस की महान सुरति का नशा ले रही है। हमेशा ही रंग में रती रहती है। रंग कहते हैं नशे को। कहते हैं नहीं, किन रंगों में हो जी आजकल। हम दुनिया के रंगों में हैं, कोई काम के रंगों में, कोई क्रोध के, कोई किसी के। वह (महापुरुष) प्रभु के रंग में रंगे पड़े हैं। शान्ति, intoxication (मस्ती) है उन में।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात

जब गुरु नानक साहब गये हैं ना, बाबर बादशाह के पास, वह भग का प्याला पी रहा था। पेश किया। कहने लगे, भई यह नशा वह है, सुबह का पीते हो

शाम को उतर जाता है, शाम को पीते हैं दिन चढ़े उतर जाता है। मेरे पास वह नाम का खुमार है, जो कभी उतरता नहीं। आत्म रंग है ना। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, वह सदा रंग में रहता है। नतीजा क्या है? "हौमें विच्चों जाले," मैं-पना कब जायेगा? जब देहध्यास से चला जायेगा (शरीर भूल जाएगा। तो उस रंग में नशे में, जिस्म-जिस्मानियत सब भूल जाती है, मैं तू का ख्याल नहीं रहता। दो से एक रूप हो जाता है। सिख किस को कहते हैं? जो "गुरु गोर अन्दर समाए।" जो गुरु की गोर (कबर) में समा जाये, मैं-पना न रहे।

चुनाँ परशुद फ़ज़ाये सीना अज दोस्त।

मेरे सीने की फ़जा (वातावरण) अपने प्रीतम से इतनी भर गई है:-

कि ख्याले ख्वेश गुमशुद अज़ ज़मीरम।

It is I, not now I, it is Christ that lives in me यह मैं हूँ, कहता है नही, यह मैं नही, यसू मसीह, Christ है मुझ में। परमात्मा को देखा नहीं। जहाँ manifested God in man (मानव देह में प्रगट परमात्मा है, the God in him (उस में जो प्रभु काम करता है) उस को contact करना (सम्बन्ध पैदा करना) प्रभु से contact करना है। उस की नज़दीकी प्रभु की नज़दीकी है, उस से दूरी प्रभु से दूरी है। पावर हाऊस से जो स्विच जुड़ा पड़ा है, जो mouthpiece बना है, पावर हाऊस का, उस के नज़दीक जाना पावर हाऊस के नज़दीक जाना है, उस से दूरी पावर हाऊस से दूरी है। इस लिये तमीजी बयान के तौर यह कहते हैं कि अगर manifested God in man न मिलता हमें तो God (परमात्मा) की क्या खबर हो सकती थी। परमात्मा से क्या खबर हो सकती थी। परमात्मा से क्या होना है माफ करना। आखिर Pole पोल ही है। बेअन्त बेशुमार बयान कर-करके हार जाते हैं।

सदियों फिलासफ़ी की चुनाँ ओ चुनी रही।
मगर खुदा की बात जहाँ थी वहीं रही।

वह अकथ, unsaid का unsaid ही रहा। तो इस लिये तमीजी बयान (तुलनात्मक वर्णन) तो किया है:-

गुरु गोबिन्द दोनों खड़े, किस के लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, जिन सत्गुरु दिया बताय।।

बड़े प्यार से समझा रहे हैं। वह रंग में, नशे में, मैं-पना जब जाता रहा तो आना-जाना किस को होगा?

जब इह जाने मैं किछ करता।।
तब लग गर्भ जून में फिरता।।

उस को understanding (सही नज़री) मिल जाती है। सही नज़री क्या है? कि All mankind is one, सब मनुष्य जाति एक है। सब आत्मा देहधारी हैं। आत्मा की ज़ात वही है जो, परमात्मा की ज़ात है और वह सब का जीवन आधार है। जो इस नज़र से दुनिया को देखेगा, वह सब का भला चाहेगा, सब की बेहतरी चाहेगा, सब से प्यार करेगा। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं:-

जब गुरु था तो मैं नहीं, मैं हूँ तो गुरु नाहिं।

वहाँ मैं-पना नहीं रहता।

वाहो वाहो पूरे गुरु की वाणी, पूरे गुरु ते उपजी साच समाती।।

वाहो, वाहो! कहते हैं आश्चर्य है। क्या? पूरे गुरु की वाणी। जो वाणी पूरे गुरु से निकलती है। कहते हैं, वह कहां से आती है? कहते हैं, "पूरे गुरु ते उपजी साच समाती।" पूरे गुरु से उस का outcome, इज़हार होता है और वह परमात्मा

में समा जाती है। साच किस को कहते हैं?

नानक साचे को सच जाण।।

वह परमात्मा, जब वह manifested (प्रगट) हो गया तोः-

आद सच जुगाद सच है भी सच, नानक होसी भी सच।।

जुग नहीं बने थे, आदि में, तब भी अटल, अब भी है, और हमेशा रहेगा। तो कहते हैं, पूरे गुरु से, जो बाणी है ना, पूरे गुरु की बाणी- लफ्ज़ यही हैं। दो लफ्ज़ हैं, गुरुवाणी, एक गुरु की वाणी। गुरवाणी तो यह है (जो यह शब्द पढ़ा जा रहा है) और गुरु की वाणी, फिर उस की और तारीफ आई है।

गुरु की बाणी सब माहिं समाणी।।
आप कथी ते आप बखाणी।।

यह वाणी चारों युगों में बजती चली आ रही है, Sound Principle है, उस में नाद हो रहा है, उद्गीत हो रहा है। यह है गुरु की वाणी। गुरु से उपजती है और साच में, अबाणी में, मिलाने के काबिल होती है। बात समझे? गुरुवाणी कहो, यह गुरुबाणी है। जो बाणी कहे, उस को माने। वह क्या कहती है?कि ऐसे पुरुष से ताल्लुक पैदा कर जो Word या नाम मुजस्मम (नाम सदेह) है, जिस में वह वाणी manifested (प्रगट) है। वाणी कहो, नाम कहो, शब्द कहो, सच कहो- एक ही माने में गुरुवाणी में आया है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, पूरे गुरु की वाणी कहां से उपजती है? "पूरे गुरु ते उपजी साच समाणी।" उस से, पूरे गुरु से प्रगट होती है। और कहां मिलाती है? परमात्मा से मिलाती है। उस में नशा है। वाणी में नशा है, उस नाद में intoxication (मस्ती) है। नाम कहो, नाद कहो। तो नाम के दो phases (अंग) हैं। एक तोः-

नाम जपत कोटं सूर उजियारा।

उसमें प्रकाश है। और:-

राम नाम कीर्तन रत्नवत।

उस में Sound principle हो रहा है। उस में बड़ा भारी नशा है। जो नाम या शब्द-मुजस्मम (सदेह शब्द) हैं, उन की सोहबत में उस की थोड़ी पूंजी मिल जाती है। फिर उस को बढ़ाओ। बड़ा खोल-खोल कर बयान किया है। आगे दिया है, "इक रहाओ' कि यह मुसल्लमा अमर (निश्चित बात) है। पूरे गुरु से वाणी उपजती है और साच में मिला सकती है। है हम में। हरेक का जीवन आधार है वह गुरु की बाणी। उस गुरु की बाणी की गुरुवाणी खबर दे रही है।

काया अन्दर सब किछु वसे, खण्ड मण्डल पाताला।।

कहते हैं, काया की ओर ज़्यादा insight करते हैं, unravel करते हैं (खोल खोल कर व्याख्या करते हैं) कि यह काया बड़ी आश्चर्यजनक है। जिस में खण्ड मण्डल पाताल बस रहे हैं। Macrocosm is in the microcosm.

जो ब्रह्मण्डे सो ही पिण्डे जो खोजे सो पावे।।

सारा ब्रह्मण्ड इस के अंतर में है। ब्रह्मण्ड में तीन phases (अंग) हैं- स्थूल, सूक्ष्म, कारण। हम को भी परमात्मा ने तीन शरीर दिये हैं, एक स्थूल है, उस के अंतर सूक्ष्म है, उस के अंतर कारण है। क्यों दिये? जब चाहे यहाँ जब चाहे वहां उन मण्डलों में काम करें। मगर हम शरीर से ऊपर जाना भूल गये। मौत के समय यह (स्थूल शरीर) उतरता है। महापुरुष बिठाता है, पिण्ड से ऊपर आने का तजरबा थोड़ा पहले दिन देता है- how to rise above body-consciousness (कैसे हम जिस्म के ऊपर आ सकते हैं)। मौत के समय तो सब की रूह सिमट कर आंखों के पीछे जाती है। वह (महापुरुष) बिठा कर थोड़ा experience (अनुभव) देता है, पूंजी देता है, ऊपर आने की। Physical life (स्थूल जगत) से ऊपर आ गये तो मौत का खौफ़ न रहा। रोज-रोज आने-जाने वाला-

गुरुमुख आवे जाए निसंक।

आगे- यह अन्त नहीं- आगे सूक्ष्म मण्डल है, कारण है। तीनों के पार, वह परमात्मा, सब का जीवन आधार है। यह wonderful house बड़ा अजीबो-गरीब मकान, यह जिस्म या काया है, जो आप को मिली है। जिस की आत्मा उस सच्चे पिर (परमात्मा) से मिली है, वह सदा की सुहागन है और वह unravel जब करता है (पिण्ड को खोजता है) तो कहता है, सारे ब्रह्मण्ड मुझ में हैं, मैं सब में हूँ, सब मुझ में हैं। यह महसूस होता है। और क्या है?

काया अन्दर जगजीवन दाता वसे, सबनां करे प्रतिपाला।।

जो सारे जगत को जीवन दे रहा है, वह इसी काया में बस रहा है, जो सारे जहान की प्रतिपालना कर रहा है। कुरान शरीफ़ में आता है, खुदा कहता है कि मैं तुम में एक मख्फी (गुप्त) खजाना छुपा बैठा हूँ, 'कुन्त कुंजन मख़फियन,' तीन ग़िलाफ़ों में मैं घिरा पड़ा हूँ, स्थूल, सूक्ष्म, कारण। तरीका बयान का अपना अपना है, बात वही है, अगर हम जिस्म-जिस्मानियत से ऊपर rise above करना सीख जाएं।

Learn to die so that you may begin to live. (मरना सीखो ताकि तुम हमेशा की ज़िन्दगी को पा जाओ)। और beyond में (पिण्ड के ऊपर दिव्य मण्डलों में) traverse करना (सफर करना) सीख जायें, तो यह एक नई दुनिया बन जाती है, अन्दर। सूक्ष्म दुनिया स्थूल दुनिया से ज़्यादा खूबसूरत, तीनों के पार, रूहानी दुनिया, उस से भी ज़्याद खूबसूरत है। तुलसी साहब ने कहा, जब मैं पिण्ड से अण्ड-ब्रह्मण्ड में पहुँचा तो मैंने कहा इस से बेहतर और कौन सी जगह हो सकती है? कहते हैं जब मैं पारब्रह्मण्ड में पहुंचा तो ऐसे मालूम हुआ कि ब्रह्मण्ड एक मेहतरों की टट्टी है। समझे?

All beauty and glory lies within you. (अर्थात् सारा सौन्दर्य, सारा रूप लावण्य आप के अन्दर है)। सेन्ट प्लूटार्क कहता है:-

Those who are initiated into the mysteries of the beyond, their soul has the same exprrience of leaving the body as it has at the time of death.

(जिन्हें अन्दर जाने का रस्ता मिल चुका है उन की आत्मा को शरीर छोड़ने का वही अनुभव होता है जो मरते समय होता है)। यह जीते-जी मरना है, पिण्ड से ऊपर जाना है। और इस का experience (अनुभव), जो God in man (महापुरुष) है, वह पहले दिन ही आप को देता है। लैक्चर, कथा, ज्ञान तो कोई भाई कर सकता है। वह परमात्मा परिपूर्ण जिस के दो phases (अंग) हैं, एक Light (ज्योति) दूसरे Sound (ध्वनि) उस की थोड़ी पूंजी वह देता है। पहले दिन पिण्ड से ऊपर आना सिखाता है, फिर दर्जे-बदर्जे सूक्ष्म, कारण से ऊपर। तो यह wonderful house है, जिस में हम रह रहे हैं। मौलाना रूम साहब ने कहा, इस काया के अन्दर बड़े-बड़े जंगल, बड़ी-बड़ी दुनिया आबाद हैं, जिन का एक बाल बराबर भी सारे ब्रह्माण्ड नहीं। अक्ल चक्कर खाता है। पहले बाहरी दुनिया ले लो। करोड़ों सियारे नज़र आते हैं, चक्कर काट रहे हैं। ऐसे-ऐसे सियारे हैं, जो पाँच हज़ार साल में एक बार अपने orbit (धुरी) में चलते नज़र आये हैं अब तक। बताओ कितना चक्कर होगा? यह है physical (स्थूल) दुनिया का हाल। अरे सूक्ष्म, कारण के क्या कहने। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं। यह किन को अनुभव होता है? जो पिण्ड से ऊपर आते हैं। हमें पिण्ड से ऊपर जाना ही भूल गया। हम जीना चाहते हैं दो घंटे और। क्यों? कि हमें जिस्म छोड़ना नहीं आया। आगे कहाँ जाना है, उस का पता नहीं। अगर हम रोज़-रोज़ छोड़ना सीख जायें जिस्म, जिस मौत से दुनिया इतनी घबराती है, अरे हम कभी वापस न आना चाहें। मगर यह मरना कैसे हो सकता है?

गुरु प्रसादी जीवन मरे, ताँ हुकमे बूझे कोय।।

किसी अनुभवी पुरुष की कृपा से अगर जीते-जी पिण्ड को छोड़ना सीखें तो Conscious Coworker of the Divine Plan (उसके हुक्म को बूझने वाला) बन जाएगा। जो हुक्म को बूझने वाला हो गया, वह कहता है यह मैं नही, वह कर रहा है।

नानक ऐसी मरनी जो मरे, तां सद जीवन होय।।

वह हमेशा के जीवन को पा जाता है। (दोजन्मा होना पड़ेगा)। बात समझे? बड़ी साफ बात है। कौन कह रहे हैं? गुरु अमरदास साहब खोल-खोल कर समझा रहे हैं। सारे महापुरुषों ने इसकी तालीम दी है। जबानदानी (भाषा) अपनी, तरजे-बयान (वर्णन शैली) अपनी, नफसे मज़मून (बात) वही है।

काया कामण सदा सुहेली, गुरुमुख नाम सम्हाला।

यह काया अति सुखी हो जाती है। कब? जो गुरुमुख नाम को जपता है, गुरुमुख नाम को संभालता है। ऐसा नाम जो गुरुमुख द्वारा मिलता है। एक मनमुख नाम कहो, एक गुरुमुख नाम कहो। "जो गुर सेती सन्मुख हो।" जो गुरुमुख होकर मिलता है। नाम कई किसम के हैं। वह प्रभु अनाम है। जब आया, उस को नाम कहते हैं। सन्तों की इस्तेहाल, परिभाषा, में। वह एक ही है।

जप मन मेरे तू एको नाम।।
सत्गुरु मोको दियो एह निधान।।

और- नाम के धारे खण्ड-ब्रह्मण्ड।।

वह एक ही है। उसके अनेकों नाम जो आगे हैं वह अक्षरों द्वारा बयान होते हैं। उनसे हमने चलना है, उस नाम के साथ लगने के लिये। कहते हैं गुरुमुख

नाम वह है जो सब को लिये खड़ा है। "नाम के धारे खण्ड-ब्रह्मण्ड" - कहते हैं जिस ने उस नाम को संभाल लिया, गुरुमुख बन कर, उस की काया अति सुन्दर है और बड़ी सुखी है। नाम से (सुव्यवस्थित) हो जाता है, खून का दौरा भी। जब हो तो सारी बीमारियाँ दूर हो जाती है। वहाँ टिकाव बनेगा। टिकाव बनेगा तो, यह बीमारियाँ जो हैं, यह क्रोध, ईर्षा वगैरह, यह-वह से बनती है।

काया अन्दर आपे वस्से, अलख न लखेया जाई।।

यही (शरीर) हरि मंदिर है, जिसमें, वह बस रहा है, जो इन्द्रियों से लखा-दखा नहीं जा सकता। वह इस में बस रहा है।

एवड उचा होवे को, तिस ऊचे को जाणे सो ।।

जब तक हम इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं जाते- पूर्ण महात्मा क्या तालीम देता है?

कोई ऐसा सन्त सहज सुख दाता, मोहि मारग देय लखाई।।

बड़े साफ लफ्ज़ हैं। बड़े प्यार से समझा रहे हैं, "काया अन्दर आपे वस्से अलख न लखेया जाई।" वह अलख है। इन्द्रियों के घाट पर उस को लखा नहीं जा सकता। और-

मनसुख मुगध बूझे नाहिं, बाहर भालण जाई।।

गुरु अमर दास साहब ने गुरुमुख और मनसुख की तारीफ की है। गुरुमुख की तारीफ की है:-

जो गुरु सेती सनमुख हो।

जो किसी अनुभवी पुरुष के सन्मुख बैठा हो उस का नाम गुरुमुख है।

सत्गुरु देखया, दीखेया लीनी,
गत-मित पाई अन्तर्गत चीन्ही।।

जब आंखे चार हों, रूह से रूह को तालीम मिलती है। अब कहते हैं मनसुख कौन?

से मनसुख जो शब्द न पछाणें।
गुरु के भय की सार न जाणें।।

जिन को अन्तर नाम परिपूर्ण से वास्ता नहीं, वह सारे मन-इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं। गुरु मिला भी है, मगर उस का भय दिल में नहीं बसा, उस का कहना नहीं मान रहे, उस को समरथ नहीं जाना, वह सारे ही मनमुखों की क्या गति है? कहते हैं, "मनमुख मुगध बूझे नाहिं बाहर भालस जाई।" मनमुख उस को पा नहीं सकते। क्यों? क्योंकि वह है तो हमारा जीवन आधार और बाहर ढूँढने जाता है उस को।

वस्तु कहीं ढूँढे कहीं केहि विधि आवे हाथ।

चीज़ तो कहीं और हो, हम ढूँढे कहीं और, तो कैसे मिलेगी? हम कहां ढूंढते हैं? ग्रन्थों-पोथियों में। ग्रन्थों-पोथियों में क्या दिया है? कि महापुरुषों ने उस को पाया। वह काया कामिनी अति सुखाली (सुखी) है, जिस में वह (प्रभु) बसता है। उस काया की तारीफ कर रहे हैं। पढ़ने से शौक बनेगा, होश आयेगी। खाली पढ़ने से लगे रहने से होश से ज़्यादा कुछ नहीं मिलेगा, information (जानकारी) मिलेगी, मगर जब तक inversion (इन्द्रियों का उलट कर अर्न्तमुख होना) नहीं है, इस (शरीर) के अन्तर दाखिल नहीं होंगे, उस को पा नहीं सकते। बड़ी साफ बात है। इन ग्रन्थों-पोथियों के होते हुए भी, भाई गुरदास क्या कहता है:-

वेद ग्रन्थ गुरु हट्ट हैं, जित लग भौजल पार उतारा।।

वेद-शास्त्र गुरु की दुकानें हैं, सब ग्रन्थ-पोथियाँ all scriptures, जिन के साथ लग कर हम ने भवजल, संसार सागर के पार जाना है। आगे क्या कहते हैं:-

सत्गुर बाझ न बुझिये जिच्चर धरे न गुरु अवतारा।।

जब तक कोई सत्स्वरूप हस्ती, कोई God in man नहीं मिलता, बूझा नहीं जा सकता। कैसा सत्गुरु? "जिच्चर धरे न गुरु अवतारा।" जब तक इन्सानी शक्ल में हमारे सामने नहीं आता- डाक्टरी किताबें होते हुए भी किसी ऐसे डाक्टर की जरूरत है जो हमारे जिस्म की anatomy कर के उस को demonstrate कर सके (दिखा सके)। ऐसे ही ग्रन्थ पोथियों के होते हुए भी किसी साधु सन्त महात्मा की ज़रूरत है, manifested God in man (मानव देह में प्रकट प्रभु) की, जिस ने अपने आप को unravel किया (खोजा और जाना) है और हमें unravelment (अपने आप को जानने) का कुछ experience (अनुभव) दे सकता है। नाम उस का कुछ रख लो। वह क्या कहते हैं? गुरु परमात्मा है, वह कभी नहीं कहते, मैं गुरु हूँ।

भीखा बात अगम की कहन-सुनन में नाहिं।
जो जाने सो कहे ना, कहे सो जाने नाहिं।।

तो बड़े प्यार से- गुरु अमर दास जी को चीज़ मिली- खोल-खोल कर समझा रहे हैं,-

सत्गुरु सेवे सदा सुख पाये, सत्गुर अलख दित्ता लखाई ।।

कहते हैं जो सत्गुरु के सेवने वाले हैं, आज्ञा का पालन करने वाले हैं, उन के वचनों पर फूल चढ़ाने वाले हैं- If you Love me keep my commandments वह हमेशा के सुख को पा जाते हैं। क्योंकि वह परमात्मा जो घट-घट

में है, उस को वह प्रकट कर दिखाते हैं। एक और जगह कहाः-

सत्गुरु सेवन से बड़भागी, राम नाम धुन अन्तर जागी।।

वह God in action Power (करन-कारण प्रभु सत्ता) में जो Sound principle है (जो ध्वनि, श्रुति हो रही है) उसका अनुभव करा देते हैं। बात समझ आ गई?

धुन आने गगन ते सो मेरा गुरुदेव।

जो उस धुनि को गगन से सुना दे, अनुभव करा दे नाद का, उस का नाम है गुरु। सारे महापुरुष यही कहते हैं। गुरु लफ्ज़ का मतलब है जो अन्धेरे में प्रकाश करे। आँख बन्द है, अन्धेरा है। बिठा कर इस स्याही के पर्दे को हटाये, अन्तर प्रकाश कर सके, ऐसी हस्ती का नाम साधु सन्त और महात्मा है। जाओ ढूँढ़ो? लैक्चर, कथा, ज्ञान, बारहमुखी साधन-पढ़ना, लिखना, विचारना पूजा-पाठ, रस्म-रिवाज वगैरह-वगैरह यह तो कोई आदमी थोड़ी ट्रेनिंग के बाद दे सकता है। अरे भई यह unravelment (अन्तर पर्दों को खोलना) demonstration (दिखाना) कैसे इन्द्रियों का घाट छोड़े, कैसे अन्तर की आँख खुले, उस की थोड़ी पूंजी मिले- यह किसी समरथ पुरुष की कहानी है।

सत्गुर मिले, अन्धेरा जाय।

जब सत्स्वरूप हस्ती मिलती है, आँख खुलती है। फिर अन्धेरा नहीं प्रकाश है। समझे? फिर आता हैः-

भाई रे कोई सत्गुरु सन्त कहावे, नैनो अलख लखावे ।।

जो भी अपने आप को सत्गुरु या सन्त कहलाता है, वह आँख बना दे, जिस से वह जो इन्द्रियों के घाट से ऊपर है, उसे लखवा दे। कितने साफ लफ्ज़ हैं। बावजूद इन बातों के भी अगर कोई भटकते फिरते हैं तो उन की किस्मत। गुरबाणी बड़ी

बड़ी clear (स्पष्ट) है। सारे महापुरुषों की बाणी पढ़िये, यही कहते हैं।

Blind leads the blind, both fall into the ditch. बड़े साफ़ लफ़्ज़ हैं।

अन्धे के राह दस्सिये अन्धा होय सो जाय।।
होय सुजाखा नानका ताँ क्यों ओझड़ पाय।।

एक आदमी के पीछे लगे हो, वह न देखता है, तुम्हें न देखने की कोई पूंजी दे सकता है। फिर तुम लगे हो। कहते हैं तुम बेवकूफ हो। कितनी clear साफ बात है।

साहब जिसदा भुक्खा नंगा होवे,
तिसदा नफ़र कित्थों रज्ज खाये।।

बड़े साफ़ लफ्ज़ हैं। बड़े प्यार से खोल-खोल के समझा रहे हैं। इस का कारण क्या है? 70 साल की तलाश में कई महात्माओं से मिले होंगे। माफ़ करना, कई साधन किये होंगे। जब वह गुरु अंगद साहब के चरणों में पहुँचे, हकीकत को पाया, बड़ा खोल-खोल कर बयान कर रहे हैं।

काया अन्दर रतन पदारथ, भक्ति भरे भण्डारा।।

इस काया के अन्दर बड़े बेशकीतम (अनमोल) खज़ाने भरे पड़े हैं भक्ति के।

काया अन्दर रतन जवाहर मानक,
जे इक गुरु की सिख सुणे।।

इस में है। कौन पाता है? जो गुरु की शिक्षा को सुनता है। गुरु ने इस mystery of life (जिंदगी की गुत्थी) को हल किया है। उसे हल करने के

लिये to start with (रस्ते पर डालने के लिये) थोड़ी पूंजी दे देता है, और साथ में सहायता करता है, until the end जब तक यह प्रभु की गोद में न चला जाए। ऐसी हस्ती का नाम साधु सन्त और महात्मा है। आख़िर वेद शास्त्र जो उन की महिमा गाते हैं, ऐसे ही तो नहीं गा रहे भई। आज गुरुडम बदनाम है तो कारण क्या है? इस competence (समरथा) के महात्मा मिलते नहीं, बहुत कमयाब (बिरले) आगे भी थे, अब भी हैं। मगर दुनिया खाली नहीं। जब तक ऐसा पुरुष नहीं मिलेगा काम नहीं बनेगा। हमारे हजूर फरमाया करते थे पाँच नामों का बतलाना क्या है? वह तो एक चरखा कातने वाली लड़की भी बतला सकती है। अरे सवाल unravelment का है, थोड़ी आंख खोलने का है, थोड़ी पूंजी मिलने का है। बिठाये, सियाही हटे, थोड़ा ज्योति का विकास, कुछ नाद का अनुभव पहले दिन दे दे, फिर दिनों-दिन उसको बढ़ाओ। जो दे सकता है, उस का साधु सन्त और महात्मा नाम है।

इस काया अन्दर नौखण्ड प्रथवी, हाट पट्टण बाजारा।।
इस काया अन्दर नाम नौ निध पाईये, गुरु के शब्द बिचारा।।

कहते है करोड़ों ब्रह्मण्ड इस में बस रहे हैं, और इस में वह परमात्मा, हरेक किसम की खुशी देने वाला, भी बैठा है। Man is great (मानव महान है) जिन्होंने greatness (महानता) को पाया है वही इस की महिमा गाते हैं। हम को मिल चुकी है, मगर अफसोस! भूसे के भाड़े बरबाद कर रहे हैं। कोई कद्र नहीं की। मुद्दतें हो गई मनुष्य जीवन मिले हुए, मुद्दतें हो गई किसी न किसी समाज में दाखिल हुए, कहां खड़े हैं? सवाल तो यह है। किसी समाज में रहो। समाजों में, सब में, यही basic (मूलभूत) तालीम दी है। ज़बांदानी (भाषा) अपनी है, तरजेबयान (वर्णनशैली) अपनी, मज़मून वही है।

अन्तर जोत निरन्तर वाणी, साचे साहब स्यों लिव लाये ।।

अन्तर ज्योति है। उस में बाणी हो रही है, जिस के सुनने से सच्चे साहिब से लिव (प्रीति) लग जाती है। बाहर की बाणी, गुरबाणी है। उस में उस वाणी की खबर मिलती है। उस में भी वह नशा थोड़ा है। दूध का उबाल दूध ही है। महापुरुषों के कलाम हैं, हीरे-जवाहरात से ज़्यादा कीमती हैं। मगर जब तक अन्तर ज्योति का विकास न हो, नाद अनुभव न हो, फिर? यही उपनिषद में आता है कि अन्तर पारब्रह्मण्ड, महाब्रह्मण्ड का सूरज है। उस से नाद हो रहा है। इस की ख़ुफिया (गुप्त) तालीम इंग्रिस ऋषि ने देवकी के लड़के कृष्ण को दी। सारे महापुरुष यही कहते हैं। ज़ोरास्ठर (महात्मा ज़रथुश्त) ने यही कहा, Pythagoras (पिथागौरस) ने यही कहा, अरस्तु ने यही कहा, अफ़लातून ने यही कहा, वेद-शास्त्र यही कह रहे हैं। मुसलमान फ़कीरों की वाणी, नूर और कलामे-कदीम कह रही है। सब यही कह रहे हैं।

काया अन्दर तोल तुलावे, आपे तोलण हारा।।
एह मन रतन जवाहर माणक, तिस का मोल अपारा।।

कि इस काया के अन्तर प्रभु बैठा हरेक को तोल रहा है, क्या मांगता है, क्या चाहता है? हरेक को, जो मांगता है, जितना काबिल है, उतना देता है। कहते हैं, इस में बड़ी बेशकीमत (अनमोल) चीज़ हमें मन मिला है। इस की बड़ी भारी कीमत है। सिर्फ उस की direction (दिशा निर्देशन) की ज़रूरत है। पहली कीमत क्या है? देखिये आत्मा चेतनस्वरूप है। यह शरीर जड़ और चेतन का मिलाप ही तो है, और क्या है? कैसे connect हो सकता है (जुड़ सकता है)।

तू चेतन यह जड़ मिथ्या, क्योंकर मेल मिलानी।

कैसे मेल हुआ? मन एक ऐसी ताकत है, जो सूक्ष्म से मिल कर आत्मा से जुड़ जाता है, और उधर स्थूल से मिल कर जिस्म से जुड़ जाता है, Con-

necting link between the two (शरीर और आत्मा को मिलाने वाली कड़ी है)। अब इस के रुख (दिशा) के बदलने का सवाल है। अगर यह जिस्म की तरफ आ गया, इन्द्रियों के भोगों-रसों की तरफ, यह ज़मीनी बन गया, अगर इस का रुख आत्मा की तरफ हो गया, यह आसमानी बन गया। बस । Like fire it is a good servant but a bad master. अगर आपके कब्जे में है (मन) तो सारे काम करेगा, आग तरह। अगर यह आप पर कब्ज़ा कर ले, फूँक कर फना (नाश) कर देगा। और सारा जहान ही, कबीर साहब कहते हैं।

मन मुरीद संसार है, गुरु मुरीद कोई साध ।।

सारे ही मन के मुरीद हैं। जिधर मन खिंचा फिरता है, इन्द्रियों के घाट में, जा रहे हैं। गुरु के, अनुभवी पुरुष के कहने को नहीं मानता। उतना ही मानता है, जिनता अपना मन माने। बस। Adjust कर लेता है। एक जागता पुरुष देख कर कह रहा है। उस की हमदर्दी है कि हमारी आत्मा प्रभु की अंश है, उस में प्रभु प्रकट है। वह बच्चे समझ कर हमारे पर रहम करता है। अपने पर वह दुख सहारता है कलेश लेता है, किसी तरह हमारी रूह वापस अपने घर को चली जाए। लोग उस को बुरा-भला भी कहते हैं। अच्छा भाई ! फिर भी वह बच्चे हैं ना उस के। वह निकालने की करता है। तो बड़े प्यार से हमें समझा रहे हैं। कहते हैं, इस की मन की बड़ी भारी कीमत है, इस से फायदा उठाओ। इन मन का क्या खासा (गुण) है? जो एक काम एक दिन, दो दिन, दस दिन यह करेगा, बेतरदद (अपने आप) करने लग जाएगा। अगर इस को नेक काम में लगा लो ना, फर्ज़ करो पूजा-पाठ में ही- दो-चार महीने करो, एक दिन न करो तो बड़ी खलबली मचेगी। इस की आदत है। है जड़। इस को direction (दिशा निर्देशन) चाहिये। Direction किस से मिलेगी? आप से। कब मिलेगी? जब आप को होश आएगी। महापुरुष तुम को होश दिलाते हैं।

Let my words abide in you and you abide in me.

मेरे वचन, क्राईस्ट कहता है, तुम्हारे हृदय में बसें। यह बात तो सब कुछ समझता है।

जो वचन गुर पूरे कहयो, सो मैं छीक गाठड़ी बांधा।।

मगर तुम कैसे मेरे हृदय में बसोगे? You abide in me. इस के लिये एक ही है।

रखो किसी को दिल में। बसो किसी के दिल में।।

जिस को अपने दिल में तुम बसाओगे, उस का reaction होगा। उस के हृदय में तुम बसोगे। सिख गुरु को याद करता है और गुरु?

सत्गुरु सिख को जिया नाल समारे।

यह गुरुबाणी कह रही है। Reaction (प्रतिक्रिया) होगी। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि इस के अन्तर मन बैठा है । वह अन्तर बैठा तोल रहा है यह किधर जा रहा है। बड़ी कीमती चीज़ है। इस का रूख बदलो- under the guidance of somebody (किसी की सीख ले कर)। काम बन जायेगा। कहते हैं मन एक हाथी की तरह है। गुरु के अंकुश लेकर इस पर काबू रखो।

मन लोचे बुरयाईयां गुरशब्दी इह मन होड़ीए।।

गुरु के शब्द द्वारा इसे काबू करो। अन्तर नाम का रस है, जैसे-जैसे वह रस मिलेगा यह मन दुनिया की लज़्जतें छोड़ देगा।

बिखे बन फीका त्याग री सखिये, नाम महारस पियो।

नाम में महारस है। वह रस मिल जाए तो यह कभी इधर नहीं आएगा।

अब चूंकि इसी में उस को लज़्ज़त आ रही है, उधर का पता नहीं है, इस लिये उधर यह जाना नहीं चाहता। अगर वह रस आ जाएः-

जब ओह रस आवा एह रस नहीं भावा।।

जब नाम का रस, अनुभवी पुरुष की कृपा से मिल जाए तो वह इस का अंकुश बन जाता है, मन काबू आ जाता है। नाम में महारस है।

बिन रस चाखे बुड्ड गई सगली सुखी न होवे जीयो।।

यह रस कैसे मिलता है? कहते हैंः-

मान महत सकत नहीं काई, साधाँ दासी थीयो।।

साधु के दास बनो। न बुद्धि बल से, न रूपये के बल से, न हकूमत के बल से, यह चीज़ मिलेगी। साधु के दास बनो। साधु कौन?

साध प्रभु भिन्न-भेद न भाई।

बड़े साफ़ लफ्ज़ हैं।

मूल कितही नाम पाईये, नाहीं पाईये गुर विचारा।।

तो नाम सबसे बड़ी चीज़ हुई ना!

जिन्नी नाम ध्यायेया गये मुसक्कत घाल।।

किसी समाज में रहो, कहते हैं किसी कीमत पर यह चीज़ नहीं मिल सकती। कैसे मिल सकती है? गुरु विचार द्वारा, अनुभवी पुरुष के चरणों में बैठ कर सही-नज़री पाने पर।

गुरु काढ तली दिखलाया।।

ऐसे दे देता है। वह यह नहीं कहता, किये जाओ आहिस्ता-आहिस्ता हो जाएगा। गुरु की निशानी यह, "गुर काढ तली दिखलाया।" बाणी तो यह कह रही है, लोग कहते हैं, किये जाओ, आहिस्ता-आहिस्ता हो जाएगा। भई कैसे हो जाएगा? यह इन्द्रियों के घाट का रूप बना बैठा है। साधन वह करता है, जिन का ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है। अरे भई वह इन्द्रियों के घाट के ऊपर कैसे जा सकता है? चाहे सारी उम्र करते रहो। नेक कर्म ज़रूर है, नेक फल मिलेगा। मगर, "नेक कर्म और बुरे कर्म जीव को बाँधने के लिये दोनों एक जैसे हैं, जैसे सोने की बेड़ी और लोहे की बेड़ी।" तो यह एक पूंजी दी जाती है:-

सन्तन मोको पूँजी सौंपी।

जैसे एक आदमी आ कर आप को लैक्चर दे, बिजनेस के असूलों पर, मगर वह लैक्चर ऐसे लोगों को हो जिन के पास पैसा ही नहीं? फिर। कोई पूँजी देनी चाहिये, थोड़ी बहुत, तब ही बढ़े ना! खाली अक्षरों का बताना काफी नहीं।

गुर बचनी हर नाम उचरो।

क्यों उस में charging होगी। गुरु के बताये हुए मन्त्र में सिद्धि है। जब तक पूंजी न मिले, रूह ऊपर जाती नहीं। कहते हैं जिस को मालिक दे, वही पा सकता है। चतुराइयों का यह मज़मून नहीं। जब तक बुद्धि स्थिर न हो, आत्मा का साक्षात्कार नहीं होता। आप को पता है, सारा जपजी साहब का उपदेश देकर आख़िर क्या कहते हैं?

जोर न मंगण देण न जोर।।
जोर न जीवण मरण न जोर।।
जोर न राज माल मन सोर।।
जोर न सुरति ज्ञान विचार।।

जोर न जुगति छुटे संसार।।
जिस हत्थ जोर कर वेखे सो।।

यह उसकी मर्जी पर है, जिस को वह मालिक दे।

धुर कर्म पाया तुध जिन को से नाम हर के लागे।।

जिस को वह मालिक आप दया करे, वह इस नाम के साथ लग सकता है। इस (नाम) के अन्तर ज्योति का विकास है। जिस के अन्तर ज्योति का विकास है, जिस के अन्तर ज्योति प्रगट हो, उस का नाम खालसा है।

पूरन जोत जगे घट में, तब खालस ताहि नखालस जानो।।

अगर ज्योति नहीं जगी, स्कूल का लेबल ज़रूर लगाया है, अभी ख़ालसा नहीं बने। जिस के अंतर ज्योति प्रगट हो, ध्वनि जारी हो, उसी का नाम सच्ची पूजा है, हिन्दुओं की। मुसलमान वह है जो खुदा के नूर को देखता है। ईसाई वह है जो Light of God को देखता है। भई ज़िन्दगी तो एक ही है, किसी समाज में रहो। किसी समाज में रहो, गुरमुख बनो, किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में बैठो। महापुरुष आते हैं, हरेक समाज में आते रहे। किसी एक या दूसरी समाज का यह reserved right नहीं। गुरु अर्जन साहब ने इस भूल को निकाल दिया। सब महात्माओं की बाणी, जो अनुभवी थे, इकट्ठी कर दी। We worship all. (सब हमारे पूज्य हैं)। रविदास जी चमार की वाणी भी है, कबीर साहब जुलाहे की बाणी भी है। जहाँ वह (प्रभु) प्रगट है, उस के चरणों में बैठो। वह तुम को काया को खोजने की तालीम देगा। बाहरी सिलसिला भीः-

मानस की जात सब एकै पहचानबो।।

यह दृष्टि देगा, आत्मा की नज़र से देखने की मगर असल काम उस का हैः-

गुरमुख हो सो काया खोजे।

काया को खोजने की तालीम देगा कि कैसे जिस्म से ऊपर आना हो सकता है, demonstrate (साक्षात्कार) करेगा।

काया अन्दर भौ-भाव वसे, गुर प्रसादी पाई।।

कहते हैं प्रभु को हम पा सकते हैं, गुरु कृपा से। जब उस का भौ (भय) बने और भाव (प्यार) बने। जिस का प्यार होगा उस का डर भी होगा कि वह हाज़र-नाज़र बैठा है।

पूरे गुर का सुण उपदेश, पारब्रह्म निकट कर पेख।।

वह परमात्मा अन्तर बैठा हरेक काम को देख रहा है। भय बन गया और प्यार बनता है। पर यह पूरे गुरु की कृपा से हो सकता है। है चीज़ हम में।

काया अन्दर ब्रह्मा विष्णु महेशा, सब ओपत जित संसारा।।

दुनिया तीन देवताओं को पूजती है- ब्रह्मा, विष्णु, महेश। इस काया में तीनों बस रहे हैं। ब्रह्मा का काम है पैदा करना, वह इन्द्री चक्र में हैं। विष्णु का काम है पालना, वह नाभी चक्र में हैं। शिव का काम है नाश करना, वह हृदय चक्र में हैं। तीनों इस के (काया के) बीच में हैं। रूह जब ऊपर जाती है, तीनों का काम खत्म हो जाता है।

एका माई जगत बियाई तिन्न चेले परवान।
इक संसारी, इक भण्डारी, इक लाए दीवान।।

तीनों का काम है।

ओह देखे ओहनां नदर न आवे।

जिस ने इन को बनाया है, उस को तो यह देखते नहीं। फिर? जिस ने इन को बनाया उस को तुम पूजो। तो ईश्वर-व्रती होना सब से बड़ी बात है। सब के लिये इज़्ज़त हमारे दिल में है, मगर जब तक ईश्वर-ब्रती न हो, उस (प्रभु)

से मिलाप नही, आना-जाना खत्म नहीं होगा। वह (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) अपना वर दे सकेंगे, मुक्ति नहीं दे सकते।

सच्चे अपना खेल रचाया आवागमन पसारा।।

उस मालिक ने यह खेल बनाया, पैदा करने की, पालने की, नाश करने की शक्ति दी। तीनों शक्तियाँ, त्रिलोक की बनाई, काम चलाने के लिये। उस की मर्ज़ी है। एक खेल बनाया उस ने। इन तीनों शक्तियों के पास मुक्ति नहीं। वह तीनों भी तुम्हारे अन्तर में हैं। यह आश्चर्यजनक मकान है (मानव देह) जिस में हम रह रहे हैं।

पूरे सत्गुर आप दिखया सच नाम निस्तारा ।।

अब गुरु अमर दास जी कहते हैं, पूरा गुरु मिला, उस ने यह सब कुछ हमें दिखाया कि खण्ड, मण्डल, ब्रह्मण्ड भी इस में (देह में) हैं, तीनों देवता भी इस में हैं। अरे परमात्मा आप इस में बैठा है। गुरु ने हम को दिखाया। गुरु वही है, जो जीते-जी दिखाए, थोड़ी पूंजी दे। फिर उस की हिदायत के मुताबिक काम करो, तरक्की कर सकते हो। थोड़ी पूंजी मिल जाए, उस को और बढ़ाओ। गुरु उसी का नाम है जो हमारी अन्तर की आंख पर पड़े सियाही के पर्दे को हटाये, अन्धेरे में प्रकाश करे। गये भी आंखें बन्द, आए भी आंखें बन्द, तो फायदा क्या? हम गुरु के पास जाने से पहले अन्धे होते हैं। अन्धे की क्या तारीफ़ दी है?

अन्धे से न अखियन जिन मुख लोईण नाहिं।।
अन्धे से ही नानका जो खसमों कुत्थे जाहिं।।

अन्धा वह नहीं जिस के चेहरे पर आंखें नहीं, अन्धा वह है जिस की अन्तर की आंख नहीं खुली, उस प्रभु को नहीं देख रहा। हम जब जाते हैं गुरु के पास,

पहले अन्धे होते हैं, फिर आंख वाले बन जाते हैं। ज्योति का विकास होता है अन्तर। पहले हम बहरे होते हैं, फिर उस ध्वनि को, नाद को जो रहा है, उस को सुनने वाले हो जाते हैं।

सा काया जे सत्गुरु सेवे सच्चे आप संवारी ।।

अब कहते हैं वही काया, काया कहलाने की हक़दार है जो सत्गुरु को सेवने वाली है, जिस काया को मालिक ने आप बनाया है, अपने हाथों से, बाहर के मकान तो हम बनाते हैं, यह शरीर तो प्रभु ने बनाया है ना! वह प्रभु आप साथ इस के बैठा है।

विण नांवें दर ढोई नाहीं तां जम करे ख्वारी।

जब तक नाम, वह परमात्मा, घट में प्रगट नहीं होता, आना-जाना खत्म नहीं होगा। आप को पता है, सनातनी भाइयों में क्या कहा करते हैं, अन्त समय आता है तो? जल्दी करो, दीवा मन्साओ। हाथ पर दीवा रख देते हैं, जोत जगाकर। कहते हैं जोत में ध्यान दो, और मन्त्र पढ़ देते हैं। अन्तर में एक ज्योति जग रही है, "दीवा बले अथक।" महापुरुष पहले दिन तुम्हारा दीवा मन्सा देते हैं। जब ज्योति जग गई अन्तर में तो दीवा मंसा गया कि नहीं? तो संसार सागर से तरने के लिये नाम- ज्योति का विकास, नाद का अनुभव चाहिये। यह चीज़ कहां से मिलती है? किसी अनुभवी पुरुष से, जिस काया के अन्तर वह प्रगट हो गया। गुरु क्या करता है?

धर्मराय दर कागत फाड़े नानक सब लेखा समझा।।

वह सारा हिसाब खत्म कर देता है धर्मराज का। सुरति को तन-मन के पिंजरे से ऊपर ला कर अन्तर नाम से जोड़ देता है। ऐसे समरथ गुरु का मिलना बड़े भागों से होता है।

कर्म होय सत्गुरु मिलाए, सेवा सुरत-शब्द चित लाए।।

गुरु अव्वल मिलता नहीं- बड़े भागों से मिलता है। मिल भी जाए, फिर भी हम अनगहली (लापरवाही) करें तो कितनी बदकिस्मती की बात है। अब निशानी क्या है मिलने की? कुछ पूंजी मिले। यह देखने वाला बने, खुद इकरार करे कि मैंने देखाः-

जब लग न देखू अपनी नैनी, तबलग न पतीजूँ गुरु की बैनी।।

पूरा यकीन तभी बनेगा जब यह देखेगा, अपनी आंखों से। ग्रन्थ-पोथियों के पढ़ने से थोड़ा ख्याल बन सकता है, विश्वास तभी होगा जब देखने वाले बनोगे।

नानक सच वडियाई पाईये, जिस नूं हर किरपा धारी।।

कहते हैं यह बड़ाई किस को मिलती है? जिस पर मालिक आप दया करे। जब दया करता है, किसी सत्स्वरूप हस्ती का मिलाप होता है। वह इस को काया को खोजने का तरीका बताता है, करके दिखाता है, व्यक्तिगत अनुभव देता है। फिर पथप्रदर्शन करता है, बाहर भी, और जब पिण्ड को छोर कर ऊपर जाओ तो अन्तर भी साथ चलता है।

नानक कच्चड़ेयां संग तोड़ ढूँढ सज्जन संत पक्केयां।।
एह जिवन्दे बिछड़ें ओह मोयां न जाही संग छोड़।।

यह तारीफ़ है अनुभवी पुरुष की। ऐसे गुरु, साधु सन्त कहां मिलते हैं? जब तक ऐसा महात्मा न मिले जीव की कल्याण नहीं। नाम से मुक्ति है ना। यह गुरु अमर दास जी का शब्द था जो आप के सामने रखा गया। यह किन को उपदेश है? सब मनुष्य जाति को।

महापुरुष साखी बोल दे सांझी सकल जहाने।।

ऐसे पुरुष का काम क्या है? सब को मिला कर बैठना। ✻